ISSN 2395-051X

आधुनिक भारत के निर्माता पंडित जवाहरलाल नेहरू

डॉ. रजनी दुबे

प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर, उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सारांश -

15 अगस्त 1947 का वह दिन जब भारत को अंग्रेजों की गुलामी से आजादी मिली थी, देश के जवानों ने जान की बाजी लगाई, गोलियां खाई तब जाकर सदियों की गुलामी के बाद भारत देश आजाद हुआ। भारत के नवनिर्माण, लोकतंत्र को मजबूत बनाने में एवं आजाद भारत को समृद्ध बनाने में पंडित जवाहरलाल नेहरू का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आज भारत देश परमाणु संपन्न देश से लेकर एक विकासशील देश में संचालित है, इसके पीछे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की सोच एवं पंडित जवाहरलाल नेहरू का कुशल नेतृत्व ही था। आज जब हम कोविड-19 जैसी परिस्थितियों से गुजर रहे हैं, तो नेहरु की वैज्ञानिक सोच हमें दिखाई देती हैं।

मुख्य शब्द - गुटनिरपेक्षता, राष्ट्रवाद, लोकतंत्र, अंतर्राष्ट्रीयतावाद पंचशील।

आजादी की लड़ाई में अग्रणी भूमिका निभाने के साथ भारत के नवनिर्माण, लोकतंत्र को मजबूत बनाने एवं आजाद भारत को समृद्ध बनाने में पंडित जवाहरलाल नेहरू का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आज हमारा देश अपना 75 वां स्वतंत्रता दिवस मना रहा है, लेकिन जब देश आजाद हुआ था उस समय देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने आजादी पर प्रथम भाषण दिया था। 15 अगस्त 1947 का वह दिन जब भारत को अंग्रेजो की गुलामी से आजादी मिली थी। देश के जवानों ने जान की बाजी लगाई, गोलियां खाई जब जाकर सदियों की गुलामी के बाद भारत देश आजाद हुआ। ना जाने भारत देश को अंग्रेजो की गुलामी से आजाद कराने के लिए कितने भारतीयों ने अपनी जान की कुर्बानी दी। सरदार बल्लभ भाई पटेल, गांधीजी, नेहरू ने सत्य, अहिंसा और बिना हथियारों की लड़ाई लड़ी, सत्याग्रह आंदोलन किये, लाठियां खाई, कई बार जेल गए और अंग्रेजों को हमारा देश छोड़कर जाने पर मजबूर कर दिया।

पंडित नेहरू ने देश की बागडोर उन विषम परिस्थितियों में संभालने का काम किया, जब विदेशी हुकूमत देश को लूटकर चली गई थी। आज यह देश परमाणु संपन्न देश से लेकर एक विकासशील देश में सम्मिलित है, इसके पीछे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की सोच व पंडित जवाहरलाल नेहरू का नेतृत्व ही था। जिस ''आइडिया ऑफ इंडिया'' की कल्पना जवाहरलाल नेहरू ने की थी, उसमें भारत को न केवल आर्थिक एवं राजनीतिक दृष्टि से स्वावलम्बी होना था बल्कि गैर साम्प्रदायिक भी होना था। ये पंडित नेहरू ही थे, जिन्होंने समाजवाद के प्रति असीम प्रतिबद्धता दिखाई और धर्मनिरपेक्षता तथा सामाजिक न्याय को संवैधानिक जामा

पहनाया। प्रगतिशील नेहरू ने विविधता में एकता के अस्तित्व को सदैव बनाए रखते हुए विभिन्न शोध कार्यक्रमों तथा पंचवर्षीय योजनाओं की दिशा तय की जिस पर चलकर भारत आधुनिक हुआ। नेहरू ने राजनीतिक आजादी के साथ-साथ आर्थिक स्वावलंबन का भी सपना देखा था तथा इसको अमली जामा पहनाते हुए कल कारखानों की स्थापना, बांधों का निर्माण, बिजलीघर, रिसर्च सेंटर, विश्वविद्यालय तथा उच्च तकनीकी संस्थाओं की उपयोगिता पर विशेष बल दिया। महिला सशक्तिकरण और किसानों के हित के लिए कटिबद्ध नेहरू दो मजबूत खेमों में बंटी दुनिया के बीच कमजोर देश के मसीहा बनकर उभरे तथा उन्होंने संगठित होकर गुटनिरपेक्षता की नीति का पालन किया।

आज जब हम कोविड-19 जैसी परिस्थितियों से गुजर रहे हैं, तो नेहरु की वैज्ञानिक सोच हमें दिखाई देती है। इन हालात ने हमें नेहरू पर फिर से सोचने पर मजबूर कर दिया है कि यदि इनके द्वारा स्थापित संस्थाओं का अस्तित्व न होता तो इस संकट की घड़ी में क्या होता। 1947 में भारत न तो महाशक्ति था और न ही आर्थिक रूप से सक्षम और आत्मनिर्भर। भारतीय राष्ट्रवाद के सबसे बड़े दुश्मन विंस्टन चर्चिल ने 1937 में नेहरू के बारे में कहा था कि ''कम्युनिस्ट क्रांतिकारी भारत में ब्रिटिश संबंध का सबसे समर्थ और सबसे पक्का दुश्मन '' 1955 में फिर चर्चिल ने कहा ''नेहरू से मुलाकात उनके शासनकाल के अंतिम दिनों की सबसे सुखद स्मृतियों में से एक है।'' ''इस शख्स ने मानव स्वभाव की दो सबसे बड़ी कमजोरियों पर काबू पा लिया है, उसे न कोई भय है न घृणा '' नेहरू की दृष्टि दूरगामी थी और अपने देश तथा विश्व की ऊंची नियति में उन्हें विश्वास था। जीवन भर मानवता के लिए उन्हें गहरा स्नेह रहा। अंधविश्वासों, धार्मिक संकीर्णताओं, ईष्या, द्वेष आदि दुर्गुणों से सदैव मुक्त रहे। देश की राजनीतिक समस्याओं के लिए उन्होंने यथाशक्ति नैतिक सिद्धांतों का उपयोग करने की कोशिश की।

नेहरू और राष्ट्रवाद -

जवाहरलाल नेहरू ने देश को एक संतुलन संयमशील और आदर्श राष्ट्रवाद के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा हिंदुस्तान मेरे खून में समाया हुआ है और उसमें बहुत कुछ ऐसी बात है जो मुझे स्वभावतः आती हैं। पर मातृभूमि के प्रति नेहरू का प्यार अंधा नहीं था। मानवता के कल्याण में नेहरू भारत के कल्याण का भी दर्शन करते थे वे टैगोर के समयात्मक विश्ववाद और विश्व बंधुत्व की भावना से प्रभावित थे।

नेहरू का विचार था कि राष्ट्रीयता एक परंपरागत शक्ति है जिसे प्रत्येक देशवासी, स्वेच्छा से स्वीकार करता है। नेहरू ने राष्ट्रीय आत्मनिर्णय के सिद्धांत पर अधिक बल दिया और साम्राज्यवाद का प्रबल विरोध किया।

नेहरू और अंतर्राष्ट्रीयतावाद -

नेहरू अंतरराष्ट्रीयवाद के पोषक थे ''विश्व में शांति और विश्व सम्प्रदाय के विचार में नेहरू का बड़ा विश्वास था। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ के उद्देश्य पत्र के प्रति जितनी आस्था दिखाएं उतनी शायद ही किसी और ने दिखाई हो।'' नेहरू का हृदय सर्वोदय की भावना से परिपूर्ण था। वे कहते थे हम सबके मित्र हैं और

हमारा कोई शत्रु नहीं है। नेहरू को अंतर्राष्ट्रीयता की प्रेरणा विवेकानंद, रविंद्र नाथ ठाकुर और महात्मा गांधी जैसे महान व्यक्तियों से प्राप्त हुई थी।

नेहरु जी ने कहा था कि ''मेरी राष्ट्रीयता अन्तर्राष्ट्रीयता पर आधारित है। और आधुनिक विश्व विज्ञान, व्यापार और यातायात के साधनों के कारण अंतररर्राष्ट्रीय की नींव पर खड़ा है। कोई भी राष्ट्र विश्व से विमुख नहीं रह सकता।'' पर नेहरु की अभी भी स्पष्ट मान्यता थी कि अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना एक स्वतंत्र देश में ही पनप सकती है।

नेहरु और लोकतंत्र -

जवाहर लाल नेहरु एक महान लोकतांत्रिक थे। उन्हें और लोकतंत्र को हम अलग करके नहीं देख सकते। नेहरु ने लोकतंत्र को केवल राजनीतिक क्षेत्र की सीमित नहीं रखा अपितु आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र को भी लोकतंत्र की परिधि में लिया। उनका कहना था कि नागरिकों को केवल राजनीतिक स्वतंत्रता देना ही पर्याप्त रही है, उन्हें अवसरों की समानता दी जानी चाहिए, आर्थिक विषमताओं उनका अंत किया जाना चाहिए। नेहरु जनसंपर्क को लोकतांत्रिक प्रक्रिया का महत्वपूर्ण हिस्सा मानते थे। अपने प्रधानमंत्रित्व काल में नेहरु ने अविराम यात्राओं द्वारा और अगणित सभाओं द्वारा जनता से संपर्क स्थापित करने की प्रणाली विकसित की। नेहरु ने जनता को निरंतर अनुशासन और भ्रातृव की प्ररेणा दी। नेहरु का लोकतंत्र से आशय समाज का आत्मानुशासन था। अपने भाषण में उन्होंने कहा कि ''आप लोकतंत्र की सैकड़ों परिभाषाएं दे सकते हैं, किंतु इसकी एक परिभाषा निश्चित रुप से ही समाज का आत्मानुशासन है। उपर से थोपा गया अनुशासन जितना कम होगा, आत्मानुशासन उतना ही ज्यादा होगा।

नेहरू एवं गुटनिरपेक्षता -

पंडित जवाहरलाल नेहरू की प्रमुख देन उनकी तटरथ एवं स्वतंत्र नीति। नेहरू का कथन था कि ''भारत तटरथ रहेगा'' स्वतंत्र भारत के लिए यह एक विकट समस्या थी लेकिन नेहरू ने बिल्कुल स्पष्ट कर दिया कि चाहे इसका परिणाम कुछ भी हो वे अपनी स्वतंत्र और तटरथ नीति का परित्याग नहीं कर सकते हैं क्योंकि भारत का कल्याण इसी नीति का अवलंवन करने में है। वस्तुतः इस नीति के अवलंबन का का निर्णय कोई क्षणिक आवेश का परिणाम न था। वरन एक गंभीर चिंतन का फल था और इसके मूल में तीन प्रमुख बातें थी। प्रथम वर्षो के साम्राज्यवादी शोषण के वाद भारत आजाद हुआ था और उसके समक्ष सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न देश के आर्थिक पुनर्निर्माण का था। यह महान कार्य शांति के वातावरण में ही संभव था। द्वितीय गौरवपूर्ण भारतीय राष्ट्रीयता और प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण स्वतंत्र रहने की उत्कृष्ट अभिलाषा तटरथ और स्वतंत्र विदेश नीति के अवलंवन में दूसरा प्रेरक तत्व था। तृतीय इस नीति के निर्धारण में परिस्थिति ने भी सहयोग दिया है। स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में जव भारत का प्रादुर्भाव हुआ तो उस समय दुनिया के किसी भी देश के साथ उसकी शुत्रुता नहीं थी और न दुनिया के किसी भाग में उनका अन्याय पूर्ण स्वार्थ ही था भारत उन शक्तियों में से अपने को दूर रखता है जिसकी नीति से शांति और सुरक्षा को खतरे में पड़ने की संभावना है।

असंलग्नता की नीति के जन्मदाता और पोषक पंडित जवाहरलाल नेहरू थे। उनके शासनकाल में इस नीति को पर्याप्त सफलता मिली। प्रधानमंत्री नेहरु के काल में देश ने अंतरराष्ट्रीय समाज में अपने लिए पर्याप्त प्रतिष्ठा प्राप्त की। साम्यवादी जगत और पश्चिमी संसार दोनों ही भारत के विचारों की उसकी निष्पक्ष नीति की कदर करते रहे भारत और भारत सरकार के प्रतिनिधियों का यथोचित आदर होता रहा। नेहरू ने भारत के लिए जिस विदेश नीति का प्रतिपादन किया उससे देश की प्रतिष्ठा में अपार वृद्धि हुई। नेहरू की विदेश नीति ने राष्ट्रीय प्रतिष्ठा में वृद्धि एवं उनके व्यक्तित्व के कारण राष्ट्र को यह सम्मान प्राप्त हुआ।

पंचशील -

पंचशील के पांच सिद्धांत कामनिपादन ही भारत की शांति प्रियता का द्योतक है। 1954 के बाद वह भारत की वैदेशिक नीति को पंचशील के सिद्धांतों ने एक नई दिशा प्रदान की है। आधुनिक पंचशील के सिद्धांत के द्वारा राष्ट्रों के लिए दूसरे के साथ आचरण के संबंध निश्चित किए गए हैं ये इस प्रकार है -

1. सभी राष्ट्र एक दूसरे की प्रदेशिक अखंडता और संप्रभुता का सम्मान करें।
2. कोई राज्य दूसरे राज्य पर आक्रमण नहीं करें और दूसरों की राष्ट्रीय सीमाओं का अतिक्रमण न करें।
3. कोई भी राज्य एक दूसरे के आंतरिक मामले में हस्तक्षेप ना करें।
4. प्रत्येक राज्य एक दूसरे के साथ समानता का व्यवहार करें तथा पारस्परिक हित में सहयोग प्रदान करें।
5. सभी राष्ट्र शांति पूर्ण सहजीवन के सिद्धांत में विश्वास करें तथा सिद्धांत के आधार पर एक दूसरे के साथ शांतिपूर्ण रहे तथा अपनी अलग-अलग सत्ता एवं स्वतंत्रता कायम रखें। प्रधानमंत्री नेहरू एवं चीन के प्रधानमंत्री चाउ एन लाई ने 28 जून 1954 को पंचशील के सिद्धांत का प्रतिपादन किया।

नेहरू का मानवतावाद -

नेहरू एक राजनीतिज्ञ थे लेकिन नैतिक आदेश में उनकी गहन आस्था जीवन पर्याप्त बनी रही। ''एक मानव के रूप में उनके चिंतन में सुकुमारता, भावना की अद्वितीय कोमलता और महान एवं उदार प्रवृत्तियों का अद्भुत समिश्रण था।'' उनका संदेश था कि व्यक्ति को व्यवहारिक और अनुभव प्रधान, नैतिक एवं सामाजिक, परोपकारी तथा मानवतावदी होना चाहिए। उनकी दृष्टि में मानवतावाद आधुनिक युग का सर्वोत्तम आदेश होना चाहिए था। आज भी दुनिया के अनेक संकट स्थल है जैसे दक्षिण अफ्रीका जहां रंगभेद का राज्य है और पश्चिम एशिया जहां अभी भी फिलीस्तीन अस्तित्व में नहीं आ पाया है। विकास में दूसरों को हिस्सा देने की कोई तत्परता भी दिखाई नहीं देती। मगर जिस हिम्मत और आस्था के साथ नेहरू ने न सिर्फ अपनी सरकार की ओर से बल्कि भारत की तमाम भावी सरकारों की ओर से भी न्यूकलीय शस्त्रों का परित्याग किया यह विश्व के लिए एक शानदार मिसाल थी और वही हिम्मत और वही आस्था आज भी भारत का मार्गदर्शन कर रही है। कोई विकल्प नहीं है उसका। गुट निरपेक्ष देशों और संसार के लिए वही एकमात्र मार्ग है। विश्व शांति और

विश्व में सुरक्षा के मामलों में नेहरू से बढ़कर कोई मार्गदर्शक संसार में नहीं हुआ है और हम भारतवासी जब तक नेहरू की भविष्य के प्रति सच्चे रहेंगे, पथभ्रष्ट नहीं होंगे।

महात्मा गांधी ने नेहरू के संबंध में अपना मत प्रकट करते हुए कहा था कि ''जहां उनमें एक योद्धा के समान साहस और जटिलता है वहां एक राजनीतिज्ञ की सी बुद्धिमत्ता और दूरदर्शी भी है। वे एक निडर, निष्कलंक और निर्दोष सरदार है, राष्ट्र उनके हाथों में सुरक्षित है।''

नेहरू जिस आजादी के समर्थक थे, और जिन लोकतांत्रिक संस्थाओं और मूल्यों को उन्होंने स्थापित किया था, आज भी खतरे में है। मानव गरिमा, एकता और अभिव्यक्ति की आजादी पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। अब समय आ गया है कि हम एकजुटता, अनुशासन और आत्मविश्वास के साथ लोकतंत्र को बचाने का प्रयास करें। आजादी के आंदोलन के मूल्यों पर फिर से बहस करें और एक साथ सशक्त और गैर सम्प्रदायिक राष्ट्र की कल्पना को साकार करने में सहायक बने। हमारे इस पुनीत कार्य में नेहरू एक पुल का कार्य कर सकते हैं।

संदर्भ -

1. वीर, डॉ.गौतम : महाशक्तियों की विदेश नीतियां, विश्व भारती पब्लि. नई दिल्ली, पृ. 2012
2. नेहरू विश्व इतिहास की झलक, मेधा पब्लि. हाउस, 2018 पृष्ठ 766
3. Jawahar lal Nehru,The Discovery of India पैगुइन पब्लि. भारत, 2008, पृ. 12
4. डॉ. राधाकृष्णनः नेहरू, मनोज पब्लि. नई दिल्ली, 2010, पृष्ठ 43
5. जवाहरलाल नेहरू श्रद्धांजलि प्रकाशन विभाग भारत सरकार, 1964, पृ. 113
6. https:// www.aajtak.in.story
7. https://bharat discovery.org.india